कार्यपुस्तिकाएँ (वर्कबुक्स) या खेलपुस्तिकाएँ (प्लेबुक्स)? – राजस्थान सरकार के स्कूलों के लिए कार्यपुस्तिकाओं के निर्माण का अनुभव

आँचल चोमल

अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन ने अपने लर्निंग गारण्टी कार्यक्रम के अन्तर्गत राजस्थान के सरकारी स्कूलों की कक्षा पहली से पाँचवी में गणित, पर्यावरण विज्ञान और भाषा के अधिगम का आकलन किया। इस अध्ययन से पता चला कि बुनियादी पढ़ने, लिखने, गणितीय संक्रियाओं और पर्यावरण के साथ सामान्य रूप से जुड़ने में अधिगम का स्तर बहुत निम्न था। इसके फलस्वरूप शिक्षक लगातार इस बात की माँग करने लगे कि,"सच्ची दक्षताएँ प्रदान करने में हमारी मदद करें।" अब तक तो विषयों को पढ़ाने के लिए पाठ्यपुस्तकें एकमात्र संसाधन थीं जो पूरी तरह से शिक्षकों से चालित होती हैं। शिक्षकों को किसी ऐसी चीज की जरूरत महसूस हुई जो पाठ्यपुस्तकों की पूरक बन सके ताकि पाठों को पढ़ाने के विविध तरीके सामने आ सकें – और उन्हें लगा कि केवल शिक्षण–प्रशिक्षण से इस उद्देश्य की पूर्ति नहीं हो पाएगी। इन्हीं कारणों से कार्यपुस्तिकाओं के निर्माण की परियोजना का प्रारम्भ हुआ।

राज्य परियोजना निदेशक के निमंत्रण पर **अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन** ने (**दिगन्तर** और **विद्या भवन सोसायटी** के सहयोग से) राजस्थान राज्य के लिए कार्यपुस्तिकाओं की रचना की। ये कार्यपुस्तिकाएँ इस राज्य के सभी 78,000 स्कूलों की पहली से आठवीं कक्षा के करीब 1.5 करोड़ विद्यार्थियों के लिए बनाई गईं। 6–8 महीने की अवधि के लिए एक टीम का गठन जयपुर में किया गया (**दिगन्तर** के साथ) और दूसरी टीम का उदयपुर में (**विद्या भवन सोसायटी** के साथ)। कक्षा 1 से 5 के लिए हिन्दी, गणित और पर्यावरण अध्ययन की कार्यपुस्तिकाओं का और कक्षा 6 से 8 के लिए हिन्दी, अँग्रेजी, गणित, विज्ञान तथा सामाजिक विज्ञान की कार्यपुस्तिकाओं का निर्माण किया गया। परियोजना में शामिल सभी लोगों ने सामूहिक रूप से मौजूदा पाठ्यपुस्तकों की सामग्री की समीक्षा की और सरोकार के बिन्दुओं के रूप में निम्नलिखित बातें उभरीं :

प्रयोग में लाई गई भाषा : पाठ्यपुस्तक में प्रयुक्त भाषा–शैली और शब्दाडम्बर की तरफ समूह का ध्यान विशेष रूप से गया। इसलिए कार्यपुस्तिका में स्पष्ट और असंदिग्ध रूप में निर्देश दिए गए और उनकी भाषा सरल रखी गई ताकि या तो विद्यार्थी उन प्रश्नों और क्रियाकलापों को खुद आसानी से पढ़कर समझ सकें या दोस्तों की मदद से समझ लें।

लेआउट : पाठ्यपुस्तक के अक्षरों का आकार, रंग के उपयोग, कुल लेआउट और छपाई की गुणवत्ता आदि सभी में सुधार की जरूरत महसूस की गई। इसलिए कार्यपुस्तिकाओं के निर्माण में इन पर विशेष रूप से ध्यान दिया गया ताकि उसका ताना–बाना ऐसा हो कि बच्चा किताबों के ढेर में से उसे उठाने के लिए सहज रूप से आकर्षित हो जाए।

सूचना का चयन : पाठ्यपुस्तकों में इस बात का ध्यान नहीं रखा गया था कि सूचना का चयन, स्थिति और प्रस्तुति आयु के अनुरूप हो। इसलिए अक्सर एक ही अनुच्छेद में बहुत सारी अवधारणाएँ दे दी गई थीं और उनके बारे में बहुत कम विवरण दिया गया था। इसलिए कार्यपुस्तिकाओं में अवधारणाओं को कक्षा के बच्चों की आयु, पूर्व अधिगम और अवधारणात्मक सम्बन्धों के अनुसार प्राथमिकता दी गई ताकि भले ही अवधारणाएँ कम हों किन्तु कुछ मूल और अवधारणाओं को गहराई के साथ प्रस्तुत किया जाए। जहाँ कहीं आवश्यक हो वहाँ अनुपूरक पठन सामग्री प्रदान की गई जिससे पाठ्यपुस्तकों में अवधारणाओं के बीच जो अन्तराल था, वह दूर हो जाए।

गलत सूचनाओं को हटाना : एक चौंकाने वाली बात यह देखने में आई कि पाठ्यपुस्तकों में कुछ सूचनाएँ तथ्यात्मक रूप से गलत भी थीं। अतः कार्यपुस्तिकाओं में दी जाने वाली सूचनाओं के स्रोतों की बार–बार जाँच की गई और सच पूछा जाए तो इस कवायद से यह बात भी समझ में आई किसी भी शिक्षण–अधिगम संसाधन का निर्माण करते समय इस प्रकार की जाँच जरूरी है।

सामग्री का अनुक्रमण और आयोजन : प्रत्येक पाठ्यपुस्तक में विभिन्न अवधारणाओं की मैपिंग (मानचित्रण) और अधिगम के चरणों की मैपिंग का अभाव था। पाठों के बीच और अवधारणाओं के बीच कोई सहलग्नता नहीं थी... अन्तःविषयक सहलग्नता तो दूर की बात थी। इसलिए कार्यपुस्तिकाओं को इस तरह से बनाया गया कि उनमें बच्चा अपने अधिगम के लिए अवधारणाओं, विषयों और स्तरों के आगे–पीछे जा सके और अगर उसके पास न्यूनतम जानकारी हो तो वह आसानी से कार्यपुस्तिका का उपयोग कर सके।

दृश्य आकर्षण : जब हम बच्चों को अपरिचित अवधारणाओं जैसे कि ज्वालामुखी या भूकम्प के बारे में बताते हैं तो यह जरूरी हो जाता है कि दिए गए चित्र उस अवधारणा के बारे में विशद अनुभव दें, क्योंकि यह सम्भव नहीं कि हर बच्चा इनसे परिचित हो ही। साथ ही यह भी जरूरी था कि चित्र अर्थपूर्ण और आकर्षक हों। कार्यपुस्तिकाओं के निर्माण में इन चीजों का भी ध्यान रखा गया।

शिक्षार्थी के स्वयं के सन्दर्भ के अनुसार सामग्री का सन्दर्भीकरण : सन्दर्भीकरण के लिए लोकगीत और परिचित गानों तथा स्थानीय वनस्पतियों और जीव–जन्तुओं के उदाहरणों का इस्तेमाल किया गया।

चूँकि ये कार्यपुस्तिकाएँ बच्चों के लिए थीं इसलिए इस बात के बहुत से अवसर प्रदान किए गए कि विद्यार्थी शिक्षक की सहायता के बिना भी स्वतंत्र रूप से, साथियों के साथ और समूह में सीख सकें। इसका यह मतलब नहीं कि शिक्षकों को बिल्कुल छोड़ दिया गया, क्योंकि कार्यपुस्तिकाओं में शिक्षकों और शिक्षार्थियों दोनों को ऐसे निर्देश दिए गए थे जो स्पष्ट, असंदिग्ध और आसानी से अनुसरणीय हों। संक्षेप में, यह पूरा संसाधन शिक्षक और बच्चे को साथ–साथ सीखने वाला मानकर ही विकसित किया गया, इस रूप में नहीं कि 'एक–दूसरे को सिखाए'।

आँचल चोमल पिछले नौ वर्षों से फाउण्डेशन के साथ कार्यरत हैं। वे अज़ीम प्रेमजी स्कूल ऑफ कंटिन्यूइंग स्कूल एवं यूनिवर्सिटी रिसोर्स सेण्टर के मूल्यांकन एवं प्रत्यायन (Accresitation) संस्थान का नेतृत्व करती हैं। इसके अन्तर्गत वे शिक्षार्थियों, शिक्षकों और शिक्षक प्रशिक्षकों के साथ आकलन के लिए रूपरेखाएँ, उपकरण, प्रक्रियाएँ और दृष्टिकोण विकसित करती हैं। उन्होंने प्रेसीडेंसी कॉलेज, कलकत्ता से स्नातक और सेण्टर फॉर स्टडीज इन रीजनल डेवलेपमेंट, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से भूगोल में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की है। उनसे aanchal@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद** : नलिनी रावल